ज़िंदगी का पानी

zindagī kā pānī

Living Water

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 8]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of I. & Sue Coate https://freebibleimages.org/illustrations/isc-buildings/; R. Gunter https://www.lambsongs.co.nz/BibleStoryBooks/DeborahAndBarrackb+w.pdf; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-1294868/; Kievninay https://pixabay.com/images/id-3778767/; Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/images/id-30597/; GDJ https://pixabay.com/images/id-5354275/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

भूले-भटके का प्यासा 1

ज़िंदगी का पानी 3

ज़ख़्म का इलाज 5

यरूशलम या गरिज़ीम? 7

रूह और सच्चाई से परस्तिश 7

मैं ही मसीह हूँ 8

नजातदहिंदा यही है 9

इंजील, यूहन्ना 4:3-30,39-42 9

एक दिन ख़ुदावंद ईसा अपने शागिर्दों के साथ सामरी इलाक़े में से गुज़र रिहा था। सामरी यहूदियों के दुश्मन थे। वह एक आबादी बनाम सूख़ार के बाहर रुके। ईसा मसीह लंबे सफ़र से चकनाचूर हो गया था। वह वहाँ पड़े एक कुएं पर बैठ गया। उसके शागिर्द शहर में गए ताकि कुछ खाना ख़रीद लाएँ।

दोपहर के बारह बज गए थे।

तब एक सामरी औरत पानी भरने आई।

► **सामरी कौन थे?**

सामरी यहूदियों से मिलते-जुलते थे। वह भी ख़ुदा की परस्तिश करते थे, लेकिन यहूदियों से अलग। दोनों क़ौमों के दरमियान सख़्त नफ़रत थी।

भूले-भटके का प्यासा

आम तौर पर लोग सुबह-सवेरे और शाम को पानी भरने आते थे। लेकिन यह औरत बारह बजे कुएं पर आई।

► **क्यों?**

यह औरत बदनाम थी। यह गुनाह में उलझी हुई औरत थी।
तो भी ख़ुदावंद ईसा ने उससे बात की।

► **क्या उसे पता नहीं था कि यह गुनाहगार औरत है?**

ज़रूर। उसे ख़ूब मालूम था।

► **तो उसने औरत से बात क्यों की?**

वह हर इनसान से मुहब्बत करता है चाहे वह कितना ही गुनाहगार क्यों न हो। वह तो हर इनसान की तलाश में रहता है। वह चाहता है कि हर एक पटरी पर वापस आए। कि हर एक ख़ुदा का फ़रज़ंद बने। कि हर एक जन्नत में दाख़िल हो जाए।

► **उसने क्या फ़रमाया? क्या उसने उसे झिड़की दी?**

नहीं। उसने कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।"

कैसी बात! दुश्मन की गुनाहगार औरत से ऐसी बात!
औरत चौंक पड़ी। कहने लगी, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?"
हम भी यह सवाल पूछते हैं। मगर ख़ुदावंद ईसा हम जैसा नहीं सोचता। वह औरत के दिल तक पहुँचना चाहता था, और वह जानता था कि इस सवाल से वह उसे अपनी तरफ़ खींचेगा।

► **पानी माँगने का क्या मक़सद था?**

अगर वह ख़ामोश रहता तो औरत से बात न छिड़ती। अगर वह झिड़की देता तो औरत की नफ़रत बढ़ जाती। पानी माँगने से उसने अपने आपको औरत के बराबर कर दिया। कितनी हलीमी!

► **इतनी हलीमी क्यों?**

इसलिए कि वह भूले-भटके का प्यासा है। वह चाहता है कि हर एक को नजात मिले।

आपको भी। मुझको भी।

ज़िंदगी का पानी

मगर पानी माँगने का एक और मक़सद भी है। वह एक बात छेड़ना चाहता है जिससे औरत को रूहानी ज़िंदगी मिले।

औरत के सवाल से शक टपक रहा है : आप तो यहूदी हैं। आप किस तरह पानी माँग सकते हैं? दाल में कुछ काला है।

फिर भी ईसा मसीह का मक़सद पूरा हो गया है। औरत उसकी बातें सुनने के लिए तैयार हो गई है। अब वह उसे सीधा असल बात तक ले जाता है। वह फ़रमाता है, "अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।"

मतलब है, मेरे पास एक ख़ुशख़बरी है। ध्यान से सुन ले! ख़ुदा तुझे एक चीज़ देना चाहता है। इसे माँग ले तो तुझे यह मिलेगी ज़रूर।

► **क्या चीज़?**

ज़िंदगी का पानी।

अब औरत मज़े से सुनने लगी है। वह कुछ मज़ाक़ में कहती है, "ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया?"

आप ख़ुद पानी माँग रहे हैं क्योंकि कुआँ गहरा है। और आपके पास बालटी भी नहीं है। तो आप किस तरह इससे बेहतर पानी दे सकते हैं? कुएं का यह इंतज़ाम हज़ार सालों से ज़्यादा चलता आ रहा है, और हम भी इसका पानी इस्तेमाल करते हैं। आप इससे बेहतर इंतज़ाम किस तरह मुहैया कर सकते हैं?

ख़ुदावंद ईसा इस हलके मज़ाक़ के जवाब में असल बात पर आ जाता है : "जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।"

जो पानी तुझे याक़ूब से मिला है वह तेरी रूह की प्यास नहीं बुझा सकता। मगर जो पानी मैं तुझे देता हूँ उससे रूह की यह प्यास बुझ जाएगी। इतनी कसरत से पानी मिलेगा कि तुझमें चश्मा बन जाएगा। ऐसा चश्मा जिसका पानी अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।

► **यह अबदी ज़िंदगी क्या चीज़ है?**

कुएँ का पानी जिस्म की प्यास बुझा सकता है। मगर मसीह का पानी रूह की प्यास बुझाता है। कुएँ का पानी बार बार पीना पड़ता है, और तो भी आख़िर में जिस्म ख़त्म हो जाता है। मसीह का पानी एक बार पी लिया तो रूह की प्यास बुझ जाती है और इनसान को अबदी ज़िंदगी मिलती है। यह पानी दिल में चश्मा बनकर इनसान को मौत के बाद भी ज़िंदगी दिलाता है।

► **वाह! क्या हम सबको ऐसे पानी की ज़रूरत नहीं?**

अब तक औरत को समझ नहीं आती। वह कहती है, "ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।"

ज़ख़्म का इलाज

लगता है कि औरत अब तक मुतमइन नहीं है। लगता है वह ख़ुदावंद ईसा को ललकार रही है कि पहले वह कुछ कर दिखाओ जो तुम कह रहे हो।

शायद वह यह भी सोच रही है कि क्या यह आदमी पीर है?

► **क्या ख़ुदावंद मसीह सिर्फ़ पीर है? जादूगर क़िस्म का आदमी?**
नहीं। वह रूहानी डाक्टर है जो उसका इलाज करना चाहता है। वह कहता है, "जा, अपने ख़ावंद को बुला ला।"

औरत बात टालकर कहती है, "मेरा कोई ख़ावंद नहीं है।"

ईसा मसीह फ़रमाता है, "तूने सही कहा कि मेरा ख़ावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।"

ख़ुदावंद ईसा कितनी महारत से अपनी रूहानी नश्तर से पीप से भरे ज़ख़्म को खोल देता है।

► **क्यों?**

वह जानता है कि औरत को इलाज की ज़रूरत है। ज़िंदगी का यह पानी सिर्फ़ इस सूरत में मिल सकता है कि वह अपने गुनाहों को तसलीम करे। कि वह तौबा करे। गुनाह का इक़रार शफ़ा का पहला क़दम है। तब ही ज़ख़्म भरेगा। तब ही ज़िंदगी का पानी दिल में आ सकता है।

अब मज़ाक़ की कोई बात नहीं रही। औरत को सदमा आता है। हाय, इस अजनबी को सब कुछ मालूम है! वह कहती है, "ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं।"

► **क्यों?**

यह अजनबी उसे उसके दिल की बातें खोलकर बताता है।

► **कौन यह कर सकता है?**

सिर्फ़ वह जो नबी है।

यरूशलम या गरिज़ीम?

लेकिन सामरियों के नज़दीक यहूदी काफ़िर हैं। यह अजनबी किस तरह नबी हो सकता है? इसलिए औरत आगे पूछती है, "हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।"

सामरी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं मानते थे। वह क़रीब के पहाड़ गरिज़ीम पर इबादत करते थे।

► **क्या ख़ुदावंद फ़रमाएगा कि वह अपनी क़ौम को छोड़ यरूशलम में इबादत करे?**

एक बार फिर वह औरत को चौंका देता है। "ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में।"

ख़ुदावंद कितनी महारत से औरत का रूहानी इलाज कर रहा है। पहले वह उसे ज़िंदगी का पानी पीने की दावत देता है। फिर वह अपनी रूहानी नश्तर से उसके गुनाहों का ज़ख़्म खोल देता है ताकि वह सही भर सके। अब वह उसकी आँखें एक नई रूहानी हक़ीक़त के लिए खोल देता है : ख़ुदा की रूहानी परस्तिश के लिए।

रूह और सच्चाई से परस्तिश

► **अगर न यरूशलम और न गरिज़ीम पहाड़ पर परस्तिश करनी है तो कहाँ करनी है?**

ख़ुदावंद फ़रमाता है, “वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे।”

► **क्या इस परस्तिश के लिए किसी ख़ास जगह की ज़रूरत है?**
नहीं।

► **क्यों नहीं?**
इसलिए कि यह परस्तिश रूहानी होगी। रूहानी इबादत हर जगह हो सकती है।

► **हक़ीक़ी परस्तार किसकी परस्तिश करेंगे?**
ख़ुदा बाप की परस्तिश। ख़ुदा से रिश्ते की ज़रूरत है। बाप-बेटे का रिश्ता।

► **तो हम किस तरह हक़ीक़ी परस्तिश करेंगे?**
रूह और सच्चाई से। वफ़ादारी के इस रिश्ते में झूठ की कोई जगह नहीं रहेगी।

► **क्या झूठ आपकी ज़िंदगी से निकल चुका है?**

मैं ही मसीह हूँ

औरत का दिल उछल पड़ता है। क्या यह वह है जिसके इंतज़ार में सब हैं?

उसकी तड़पती रूह कहती है, “मुझे मालूम है कि मसीह आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

अब मसीह सीधा उसे बताता है, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

नजातदहिंदा यही है

► **औरत का क्या जवाब है?**

उसमें इतना जज़बा आता है कि वह घड़ा वहाँ छोड़ शहर में चली जाती है। अब वह किसी से नहीं कतराती बल्कि हर मिलनेवाले से कहती है कि “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?”

लोग शहर से निकलकर ख़ुदावंद ईसा के पास आते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि उनमें से बहुत लोग उस पर ईमान भी लाते हैं। वह औरत से कहते हैं, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”

► **वह क्या जान लेते हैं?**

कि ख़ुदावंद ईसा दुनिया का नजातदहिंदा है। वह जो ज़िंदगी का अबदी पानी देता है। जो गुनाहों का इलाज करता है। जिससे इनसान का ख़ुदा से रिश्ता बहाल हो जाता है और वह रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करता है।

इंजील, यूहन्ना 4:3-30,39-42

ख़ुदावंद ईसा [...] यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।" (उसके शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।"

ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ावंद को बुला ला।”

औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ावंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सही कहा कि मेरा ख़ावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

औरत ने कहा, “ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी

लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।"

ईसा ने जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। तुम सामरी उसकी परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उसकी परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।"

औरत ने उससे कहा, "मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।"

इस पर ईसा ने उसे बताया, "मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।"

उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्रत न की कि "आप क्या चाहते हैं?" या "आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?"

औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

[…]

उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।

और उसकी बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। उन्होंने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”